हिन्दी
छायावादी रचनाओं में
बौद्ध–दर्शन

नमूना • SAMPLE

SAMPLE

हिन्दी
छायावादी रचनाओं में
बौद्ध–दर्शन

डॉ. अनिल कुमार त्रिपाठी

अखण्ड पब्लिशिंग हाऊस
दिल्ली (भारत)

नमूना • SAMPLE

प्रकाशक :

अखण्ड पब्लिशिंग हाउस

एल–9 ए, Ist फ्लोर, गली नं. 42,
सादतपुर एक्सटेंशन, दिल्ली–110094
मो. 09013387535, 09968628081
E-mail : akhandpublishing@yahoo.com

हिन्दी छायावादी रचनाओं में बौद्ध–दर्शन

संस्करण : 2010
© लेखक : Dr. Anil Kumar Tripathi
ISBN: 978-93-81416-72-3

भारत में मुद्रित

अखण्ड पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली एल–9 ए, Ist फ्लोर, गली नं. 42, सादतपुर एक्सटेंशन, दिल्ली–110094 द्वारा प्रकाशित। वैष्णवी कम्पयूट्र्स, दिल्ली–110093 द्वारा शब्दांकित, तरुण आफसेट प्रिंट्र्स, दिल्ली में मुद्रित।

नहीं SAMPLE

समर्पण



पंडित स्व० वासुदेव त्रिपाठी
(1921–1999)

ममतामयी, अशेष स्नेह की प्राणवान प्रतिमूर्ति, जिनकी गोद में मेरा बचपन मचलता रहा और अब जिनकी पावन स्मृति, मेरी प्रौढ़ता में भी अपने स्नेहसिक्त प्रतीकात्मक संस्पर्श से सहलाती रहती है; निराशा में मुझे साहस–स्फूर्ति प्रदान करती रहती है, उन परमपूज्या जन्मदायिनी जननी पाराम्बा स्वरूपा स्मृतिशेष ममतामयी माँ सुमित्रा त्रिपाठी तथा वसुस्वरूप सुखधाम पिता बासुदेव त्रिपाठी के श्रीचरण–कमलों में भाव–प्रसून लेकर सादर, सश्रद्धा, सविनय नमन।

अनिल कुमारी त्रिपाठी
एवं
त्रिपाठी संगीता प्रियदर्शनी

SAMPLE

SAMPLE



प्रो0. (डॉ.) उमेश चन्द्र मिश्र 'शिव'
भूतपूर्व (हिन्दी) विभागाध्यक्ष
मगध विश्वविद्यालय, बोधगया (गयाजी)

गहरे पानी पैठ

सुप्रसिद्ध सुप्रचलित कहावत है :

"जिन ढूंढा तिन पाइयाँ, गहरे पानी पैठ।
मैं बपुरा बूढ़न डरा, रहा किनारे बैठ"।।

इस कहावत की सत्यता प्रामाणिकता सचमुच तब समझ में आयी जब प्रियवरेशु डॉ. अनिल कुमार त्रिपाठी की प्रकाशन–प्रक्रिया में पहुँची पुस्तक "हिन्दी छायावादी रचनाओ में बौद्ध–दर्शन" के सिंहावलोकन का अवसर प्राप्त हुआ। निजी जीवन एवं पारिवारिक परिवेश के कारण मेरी रूचि धर्म, संस्कृति, ब्रह्म, जीव, जगत मायादि को जानने समझने की रही है। इस कारण कुछ विषेश ध्यान–मनोयोग से डॉ. त्रिपाठी की प्रकाश्य पुस्तक का विहगावलोकन नही अपितु सिंहावलोकन और अवगाहन किया।

पहले किंचित क्वचित संशय के श्याम घन मस्तिस्क में छाये, जब दर्शन धर्म, संस्कृति, ब्रह्म, जीव, जगत जैसे नीरस, उबाऊ, दुरूह, जटिल, एवं विवादों की संभावनाओं से युक्त विषय पर डॉ. त्रिपाठी की पुस्तक मैंने देखी, किन्तु कुछ हीं पृष्ठों को देखने और पढ़ने पर सहर्ष अनुभूति हुई। कि लेखक ने गहन अध्ययन चिन्तन–मनन और विश्लेषण पूरी ईमानदारी और सतर्कता से किया है। रचना धर्मिता का मनोयोग और श्रमपूर्वक अनुपालन किया है। तब संतोष की अनुभूति हुई और आगे अवलोकन–पारायण की यात्रा मैंने संपन्न की।

चामत्कारिकता, लाक्षणिकता, नवीन प्रयोग, विलक्षण, कल्पना शीलता, चित्रात्मकता की पहचान रखने वाले छायावाद की मोहक, सुखद, मनोहर और मृदुछाया–झुरमुट के भीतर गहरे पानी पैठ कर कवि–हृदय समालोचक

SAMPLE

डॉ. त्रिपाठी द्वारा बुद्ध के जीवन–दर्शन के मोती सरीखे शांति, अहिंसा, करूणा, जनसेवा, त्याग जैसे गूढ़ तत्वों को निकालना गहरे पानी पैठ से ही संभव था। इन शाश्वत मूल्यों के दर्शन प्रथमतः वेदों, उपनिशदों में प्राप्त है, तत्पश्चात् बुद्ध के जीवन में उनका समाहार और तदुपरि उनकी वाणी द्वारा उनका प्रचार–प्रसार इतिहास का अकल्पनीय और अत्यन्त दुर्लभ सुखद संयोग है।

पल्लवित पुष्पित, प्रस्फुटित होकर पुष्प की सुरभि वायु के पंखों पर सवार होकर मात्र वायु की प्रवाहित दिशा को सुवासित करती है, किन्तु महात्माओं की वाणी की सुगंध और उनके सुकृत्य की गाथा को दशोदिशाओं में प्रसारित होने हेतु वायु की अपेक्षा नहीं होती, यह स्वतः सहज प्रक्रिया में होता है।

आलोच्य पुस्तक को कई खण्डों में विभाजित कर रचनाकार ने उनमें बुद्ध–दर्शन की दशा–दिशा–स्वरूप, प्रभाव ढूँढ़ने का जो दुश्कर कार्य सफलतापूर्वक संपादित किया है, यह सर्वथा प्रशंसनीय और साधुवाद पाने योग्य है। छायावादी प्रमुख स्तंभों की रचनाओं में बड़े मनोयोग पूर्वक डॉ. त्रिपाठी ने बुद्ध दर्शन की छाया और प्रभाव को दर्शाया है। बुद्ध की अहिंसा–करूणा ने वस्तुतः श्री जयशंकर प्रसाद, सूर्यकांत त्रिपाठी निराला और महादेवी वर्मा सुतित्रानंदन पंत को पर्याप्त झकझोरा है। प्रसाद के हृदय में जब विकल रागिनी बजती है, तब स्वतः हाहाकार स्वरों में वेदना चीत्कार उठती है। प्रसाद ने "वरूणा की शान्त कछार, तपस्वी के विराग की प्यार" के माध्यम से भी बुद्ध की गरिमा का गायन और दर्शन को स्वीकृति दी है। महादेवी का सम्पूर्ण जीवन करूणा–कलित रहकर नीरभरी दुःख की बदली के रूप में रिमझिम बरसता है।

जिस दुःखवाद ने बुद्ध को सर्वाधिक प्रभावित किया है और जिसके कारण कठोर तपस्या के मार्ग का उन्होंने चयन किया और परिणामतः सत्य–शांति की उनकी खोज सम्पूर्ण सफलता को प्राप्त कर सकी वही दुःखवाद, करूणा महाप्राण महाकवि निराला के संपूर्ण जीवन की व्यथा–कथा रही। खुद कवि ने स्वीकारा है–

दुःख ही जीवन की कथा रही।
क्या कहूँ आज, जो नहीं कहीं।

अभाव, घुटन, पीड़ा, वेदना, सामाजिक उपेक्षा के भाव जितना निराला ने सहा, विश्व के किसी अन्य कवि ने नहीं।

भगवान बुद्ध की अमरवाणी और दिव्य स्वर्गिक संदेश की संवाहिका भावसाम्य की पंक्तियाँ महाप्राण निराला के काव्य में भरी पड़ी है। प्रेम, करूणा, मानवतावाद की पराकाष्ठा कवि निराला की इन पंक्तियों में सहज द्रष्टव्य हैं :–

''जो करे गंध–मधु का वर्जन
वह नही भ्रमर;
मानव मानव से नहीं भिन्न,
निश्चय, हो श्वेत–कृष्ण, अथवा,
वह नहीं क्लिन्न;
भेद कर पंक
निकलता कमल जो मानव का
वह निष्कलंक
हो कोई सर"

'सम्राट अष्टम एडवर्ड के प्रति' (अनामिका) तत्कालीन सामाजिक परिप्रेक्ष्य में गौतम के दिव्य संदेश की आँधी बही थी, जिससे अप्रभावित रहना तत्कालीन समाज के किसी कवि, लेखक, सामान्यजन के लिए कदापि संभव नहीं था।

निश्चित ही विश्वसमुदाय के परमकल्याण के लिए संकल्पित हैं। बौद्ध–दर्शन वस्तुतः इसे बुद्ध के लोकातीत तप, त्याग, करुणा, दान, शील, शान्ति, तथा प्रज्ञा की एक दुर्गम यात्रा का परिणाम ही कहा जायेगा। इसी धर्म दर्शन ने मानव के आन्तरिक व बाह्य व्यवहारों का बड़ी गंभीरता से परीक्षण कर उसे एक विश्व कल्याणकारी सद्धर्म का मार्ग दिखाया है। इतना ही नहीं बल्कि इस दुनिया के थके–मंदे दुःख पीडित लोगों को कट्टरवाद तथा रूढ़ियों के पाष से मुक्त कर सत्य, अहिंसा, समानता एव करूणा की सुखद भूमि पर प्रतिष्ठा एवं शिक्षा में दीक्षित किया है। परिणामतः, बौद्ध धर्म किसी वंश, जाति, गोत्र, धर्म–समुदाय, देश की लक्ष्मण रेखा लांघ कर कई क्षितिज पार कर आज भारत से बाहर नेपाल से भूटान, म्यांमार से थाईलैण्ड, चीन से जापान, जर्मनी से तिब्बत, कोरिया से कनाडा तक ऐसे अनेक देशों में अपनी

SAMPLE

ज्ञान–गंगा की अविरल धारा प्रवाहित कर रहा है। इसके सबल आधार है, इस धर्म–दर्शन की अनुपम लोकहितकारी सुपरीक्षित शिक्षा एवं उसका विशालतम साहित्य। यह धर्म–दर्शन आज किसी एक भाषा या एक लिपि तक ही सीमित नहीं, बल्कि प्राचीन एवं अर्वाचीन अनेक स्वदेशी तथा विदेशी भाषाओं, लिपियों, सीमान्त प्रदेशीय भाषाओं में एक लम्बी ग्रन्थ परम्परा के रूप में निबद्ध है। जब तक कोई भी लेखक इसके समूचे राष्ट्रीय उपलब्ध शिक्षा साहित्य से परिचित नहीं होगा तब तक उसकी लेखनी समग्र परम्परा को समुचित रूप से प्रकाशित नहीं कर सकती। इसमें देवभाषा संस्कृत को प्रथम स्थान प्राप्त है, क्योंकि इसमें भगवान बुद्ध के सूत्र वचन आज भी प्रमाण स्वरूप प्राप्त है, जैसे लंकावतार सूत्र, ललितविस्तर, सद्धर्मपुण्डरीक इत्यादि। वैसे भी दुनिया की समस्त भाषाओं में संस्कृत को विद्वानों ने सर्वप्राचीन स्वीकारा है। जहाँ वैदिक साहित्य दुनिया की प्रथम अभिव्यक्ति के रूप में प्रतिष्ठित है। इसके बाद पालिभाषा में भी बौद्धधर्म–साहित्य उपलब्ध है। पुनः मागधी, शौरसेनी इत्यादि भाषाओं में भी प्राप्त है। विदेशी भाषाओं में भी बौद्धदर्शन के अनुवाद आज भी सुरक्षित है। अंगरेजी में तो विदेशी विद्वानों ने इस कड़ी में विशाल साहित्य की रचना कर डाली।

डॉ. त्रिपाठी संस्कृतज्ञ होने के साथ ही अंगरेजी के भी कुशल, सफल अध्येता और सुविज्ञ हैं तभी उन्होंने विदेशी विद्वान् फाह्यान, ह्वेनसांग, कार्लमार्क्स आदि के मतों तथा आधुनिक हिन्दी साहित्य के विद्वानों में जयशंकर प्रसाद, महादेवी वर्मा, सूर्यकान्त त्रिपाठी निरालाजी एवं पंत, जी जैसे कवियों के साहित्य को भी सम्मिलित कर छायावादी रचनाओं में बौद्धदर्शन को निश्चित रूप से सर्वाङ्गपूर्ण रूप में प्रस्तुत कर वर्तमान अध्येताओं का महनीय उपकार किया है। अभी तक बौद्धदर्शन पर छायावाद साहित्य का प्रभाव तथा बौद्ध दर्शन का साहित्य पर प्रभाव की विवेचना सम्भवतः नहीं हुई है। जब तक किसी भी शास्त्र की भाषा के पूर्वोत्तर साहित्य की क्रमिक विवेचना न हो तब तक अध्येता दर्शन में साहित्य का आनन्द नहीं उठा सकता। इस दृष्टि से भी दर्शन जैसे शुष्क विषय पर यह पुस्तक साहित्यिक हलचल लाकर पाठकों को हस्तामलकवत् छायावाद पर बौद्ध दर्शन का कुछ ज्ञान उपलब्ध कराने में निश्चित ही सफलता प्राप्त करेगी ऐसा मेरा दृढ़ विश्वास है।

डॉ. त्रिपाठी ने जयदेव के गीतगोविन्द के **"केशव धृतबुद्धशरीर जयजगत् ईश हरे"** का भी दृष्टान्त दिया है। बुद्ध को विष्णु के समस्त गुणों से विभूषित दिखाया गया है। वैदिक शिव संकल्प सूक्त के आधार पर –

"यज्जाग्रतोःदुरमुदैत दैवं तदु सुप्तस्य तथैवैति।
दुरंगमं ज्योतिरेकं तन्मे मनः शिवसंकल्पमस्तु।।"

तथा गीता के द्वितीय अध्याय के श्लोक के आधार पर बुद्ध प्रोक्त सुख–दुःख की स्थिति, अष्टांगमार्ग पर उसका प्रभाव भी परिलक्षित होता है। शर्तृहरि के योगवाद के प्रति वितृष्णा पर बौद्ध प्रोक्त आर्य सत्य चतुष्टय का भी प्रभाव परिलक्षित होता है। महाभारत के विदुर पर शी बुद्ध के जीवन–दर्शन का समान प्रभाव दिखलाई देता है। इसी तरह डॉ. त्रिपाठी ने पौराणिक सन्दर्भों पर भी बुद्धजीवन चर्या का प्रभाव प्रतिपादित किया है। बौद्ध–दर्शन के अंतिम लक्ष्य निर्वाण–प्राप्ति को हिन्दू दर्शन में स्थितप्रज्ञ एवं जीवनमुक्त की उपाधि से संप्रयुक्त बताया गया है। बौद्ध प्रमाणमीमांसा पर भी इतिहास क्रम से पर्याप्त विचार किया गया है। इस रचना से बौद्ध अध्येताओं को बौद्ध दार्शनिक आचार्यों के जीवनवृत्त तथा उनके पारस्परिक संबंधों का भी परिचय प्राप्त होगा।

डॉ. त्रिपाठी की विवेचना–दृष्टि अत्यन्त तटस्थ, बहुआयामी व यथार्थ पर सुदृढ़ प्रतीत होती है। उन्होंने लोकनायक भगवान बुद्ध को संस्कृत के पूर्ववर्ती साहित्य से जोड़ने तथा संस्कृत साहित्य को बुद्ध से जोड़ने का अनुपम बीड़ा उठाया है वह भी बौद्ध भिक्षु से बौद्धधर्म की दीक्षा प्राप्तकर, उन्होंने पालि प्राकृत अपभ्रंश साहित्य के योगदान की भी अनदेखी न कर आधुनिक हिन्दी साहित्य के उत्तुंग शिखर जयशंकर प्रसाद जैसे अनेक कवियों के उद्धरण देकर बौद्धधर्म की नवीन गतिविधियों को भी उजागर किया है।

डब्ल्यू• एच• हडसन, आई. ए. रिचर्डस आदि के पाश्चाय समीक्षाशास्त्रीय प्रकारान्त से स्वीकार करते हैं कि समीक्षा का उत्कृष्ट मानददंड है : – "Neither praise nor blame is the true object of criticism" यानी न किसी रचना या रचनाकार की अप्रत्याशित, असीमित प्रशंसा और न किसी की अनावश्यक निन्दा या नकारात्मक आलोचना यानी समान धर्मी होकर रचना के गुण, दोष, धर्म स्थापनाओं की सम्य विवेचना और आकलन करना मात्र

एक पारंपरिक रूढ़िवादी विचारक नहीं दिखते, अपितु वे बौद्ध–दर्शन के अध्येताओं को ऋषियों तथा अन्य स्वदेशी–विदेशी दार्शनिक चिन्तन धाराओं से भी अवगत कराना चाहते हैं। इसी क्रम में पुस्तक के षष्ठ अध्याय में उन्होंने भारतीय वांग्यमय के देदीप्यमान सूर्य नागार्जुन और अश्वघोष पर विशेष रूप से डॉ. त्रिपाठी ने अपनी समीक्षा दृष्टि डाली है और सतर्क विश्लेषण, प्रतिपादन किया है, जैसे ऋषि, महात्मा, पैगम्बरों आदि द्वारा स्थापित दर्शन पर भी पाठकों का ध्यान आकर्षित किया है। इसमें आर्श–अनार्श के विभाजन के तौर पर सांख्य, वेदान्त आदि को आर्श तथा बौद्ध, जैन मतों को अनार्श बतलाया है। इसमें नास्तिक–आस्तिक के भेद के तौर पर छः नास्तिक तथा छः आस्तिक दर्शन का विभाजन किया गया है। नास्तिक में चार्वाक, माध्यमिक, योगाचार, सौत्रान्तिक, वैभाषिक और आर्हत को स्थान दिया गया है। वेदविरोधी होने से ही ये नास्तिक कहे गये। वैसे इन्हें अनीश्वरवादी दर्शन नाम से भी जाना गया है। महाभारत के आधार पर त्रिपाठी ने सांख्य, योग, पांचरात्र, वेद तथा पाशुपत ये पाँच सम्प्रदाय निर्दिष्ट किये हैं। तथा अपनी प्रस्तुत रचना में पूर्ण अध्यवसाय, मनोयोग, तल्लीनता से छायावादी कवियों की रचनाओं में बौद्ध–दर्शन की व्याप्ति प्रभाव और स्थिति–स्वरूप की खोज पूर्ण विश्लेषण–प्रतिपादन कर भविष्य के हिन्दी पाठकों को ज्ञानार्जन, शोधोपयुक्त ठोस धरातल प्रदान करने का सुकार्य किया है। भारतीय दर्शन के साथ संबंध और पारस्परिक विरोध की स्थिति में बौद्ध–दर्शन की दशा–दिशा स्वरूप का भी रचनाकार ने प्रर्याप्त विश्लेषण प्रस्तुत किया है। छायावाद के अप्रतिम हस्ताक्षर और प्रमुख स्तंभ जयशंकर प्रसाद के नाटकों में विशेष रूप से बौद्ध–दर्शन की व्याप्ति और प्रभाव का विश्लेषण विशेष सराहनीय है।

साहित्य शास्त्र का सर्व स्वीकृत सिद्धान्त है कि कविता करना किन्चित सरल है अपेक्षया गद्य लेखन या समीक्षा कार्य के तभी तो कहा गया है ***गद्यं कवीनां निकशं वदन्ति*** स्वभाव से साहित्यानुरागी मन से कवि और हृदय से तटस्थ समीक्षक के रूप में इनका गद्य लेखन भी स्पृहणीय है।

समीक्षा के लिए सर्वथा–सर्वदा सहज, सरल, बोधगम्य भाषा की अपेक्षा होती है, जो सर्वजन सुलभ हो, सहज पठनीय–ग्रहणीय हो, इस निकर्ष पर भी डॉ. त्रिपाठी सर्वथा सफल दिखते है। संपूर्ण रचना में इनकी भाषा–सहज,

सरल, सरस, बोधगम्य, प्रांजल, प्रभावशील रही है, साथ ही संश्लिष्ट भी।

अंततः विषय के गहन अध्ययन–विश्लेषण और प्रतिपादन मंजी भाषा में उसकी अभिव्यक्ति, एक सर्वथा नवीन विषय पर शोधपूर्ण विवेचना के लिए मैं डॉ. त्रिपाठी को शतषः साधुवाद और शुभकामनाएँ देता हूँ। पुस्तक भावी पीढ़ी को बुद्ध–दर्शन की नयी दशा–दिशा और ज्ञान देने में सहायक होगी। ऐसी शुभेच्छा और कामना के साथ विश्वास भी है।

अंततः विषय के गहन अध्ययन–विश्लेषण और प्रतिपादन मंजी भाषा में उसकी अभिव्यक्ति, एक सर्वथा नवीन विषय पर शोधपूर्ण विवेचना के लिए मैं डॉ. त्रिपाठी को शतषः साधुवाद और शुभकामनाएँ देता हूँ। पुस्तक भावी पीढ़ी को बुद्ध–दर्शन की नयी दशा–दिशा और ज्ञान देने में सहायक होगी। ऐसी शुभेच्छा और कामना के साथ विश्वास भी है।

इति शुभम्।

प्रो0 (डॉ.) उमेश चन्द्र मिश्र शिव
भूतपमर्व विभागाध्यक्ष (हिन्दी) विभाग,
मगध विश्व विद्यालय, बोधगया

SAMPLE

SAMPLE

अंतर्मन के उद्‌गार

मुझे अपनी इस रचना के क्रम में भारत के अनेक पुस्तकालयों, महाविद्यालयों, विश्वविद्यालयों के प्रकाशन एवं शोध, लेखकों एवं विद्वानों की विचारधाराओं के बारे में अध्ययन करने का अवसर प्राप्त हुआ। हमारी इस पुस्तक का शीर्षक *"हिन्दी छायावादी रचनाओं में बौद्ध–दर्शन"* पर निरंतर अभाव की अनुभूति होती रही, क्योंकि विश्व स्तरीय बौद्ध–धर्म से अनेक साहित्यिक एवं दार्शनिक शोध के अभाव तथा समय के अन्तर्गत प्रकाशित एवं मुद्रित नही होने के कारण मैं अपने इस ग्रंथ को विश्व बौद्ध धर्म–दर्शन के स्रोत के तौर पर बहुत गहरा एवं प्रभावकारी संबंध स्थापित कर सकता हूँ। बौद्ध धर्म–दर्शन के महाभाष्य शाखा जिसके अन्तर्गत संस्कृत के मूल ग्रंथो की उपयोगिता बौद्ध–दर्शन के निर्माण में किये गये थें। क्योंकि इनको साहित्यिक भूपटल पर सजाया संवारा नहीं गया था! इसलिए मैंने इस ग्रंथ की रचना आप सब के सामने प्रस्तुत करने का साहस अपने बल पर नहीं बल्कि अपने समस्त गुरुजनो, वृहस्पतियों एवं पूर्वजों, समस्त सहयोगी मित्रों के तपोबल एवं आशीर्वादोपरान्त किया है।

अनादि काल से मनुष्य अपनी पीड़ाओं से अंत का उपचार ढूँढ़ता आ रहा हैं। भारतीय मनीषियों, एवं साहित्यकारों ने मानव–जीवन को आनन्द का बाजार नहीं दुःखों का हाट कहा है और इन दुखों के कारण से छुटकारा पाने हेतु अनवरत चिन्तन–मनन करते रहे हैं। हजारो वर्ष पूर्व कपिलवस्तु के राजकुल में उत्पन्न एक सुकुमार बालक को भी व्यासपुत्र शुकदेव की तरह बहुत कम उम्र में ही सांसारिक दुखों का ज्ञान हो गया था और वह इन दुखों के उपचार ढूढ़ने हेतु अपने समस्त वैभव का त्याग कर आधी रात को

SAMPLE

परिनिर्वाण हेतु सोयी हुई अपनी सुन्दर पत्नी, नवजात शिशु एवं पिता का निष्ठुरता से त्याग कर दिया। जन–कल्याण–हित राजकुमार के इन महान त्याग एवं मानव–प्रेम को विश्व सदा याद करता रहेगा। अपने सुखमय जीवन को दुखों की भट्ठी में झोंक कर मानव हित उसने जो औषधी निकाली उससे विश्व के सभी जन चमत्कृत हुए – जिसे बुद्ध और दर्शन की संज्ञा दी गयी। बुद्धमत और बुद्ध–दर्शन का विश्व के सभी चिन्तकों सत्यान्वेषियों विचारकों, साहित्यकारों पर युग–युगान्तर तक प्रभाव रहेगा। बुद्ध–दर्शन एक दिव्य जीवन–दर्शन है, जो कालजयी और सदैव प्रासंगिक हैं।

दया, करूणा, मैत्री सद्भावना, अहिंसा, पाप–देशना, निस्वार्थ और नैसर्गिक प्रेम के दिव्य संदेशो के कारण बुद्ध और उनके दर्शन का विश्व साहित्य पर केवल सुप्रभाव ही नहीं रहा अपितु भगवान बुद्ध के दिव्य संदेश की गूंज हिन्दी साहित्य में भी आदि काल से अद्यतन है और रहेगा। जिस घटना से भगवान बुद्ध प्रभावित हुए उन घटनाओं को हम सभी नित्य देखते है, सुनते है पर सिद्धार्थ जैसे विकल नहीं होते और यदि विकल होते भी हैं तो हमारे मन में महाभिनिष्क्रमण के भाव नहीं आते।

आलोच्य छायावादी काल के हीं समवर्ती कवि गुप्त जी ने यशोधरा नामक चम्पू काव्य में इसका सुन्दर चित्रण प्रस्तुत किया है। संसार की निःसारता तथा दुखों से दग्ध मानव–जीवन, युवराज सिद्धार्थ को प्रभावित करता है। वे सोचते है कि युवराज सिद्धार्थ वैसे जीवों में नहीं थे जो दूसरों को दुखी देखकर अपनी आँख फेर लें। उन्होंने जीवन के यथार्थ, दुःख और दर्द को निकट से देखा और निष्कर्ष निकाला कि दुख है तो दुखो के अन्त का उपचार भी होगा, जिससे अन्वेषित करने की जरूरत है। इस तरह तो मैं भी एक दिन तिल–तिल कर मर जाउँगा और मेरा मानव जन्म व्यर्थ चला जायेगा। मुझे शीघ्रता करनी होगी। जैसे किसी धर्म–दर्शन को जन–जन तक संप्रेषित करने का सबसे सशक्त और सरल मार्ग कवियों के द्वारा रचित काव्य को ही माना जाता है। काव्य के द्वारा उदाहरण प्रस्तुत करने की एक क्षमता होती है कोरे उपदेशों या कठोर आज्ञाओं को भी कान्तासम्मित बनाकर जन–जन तक संप्रेषित करना। भगवान बुद्ध की दिव्य करूणा के मूल श्रोत सभी धर्मों के मेरूदंड है। संसार के सभी धर्मों एवं संप्रदायों में अन्तः–श्रोत, सभी जीवों पर दया और करूणा है। किसी प्राणी को मन वचन और कर्म से किंचित पीड़ा पहुँचाना पाप हैं। इस की अनुभूति जब अपने पिता जी की गोद

में खेलते हुए मुझे निरंतर स्मरण है कि रविबाबू के कोमल, स्नेह–सिक्त गीतांजलि की पंक्तियाँ सुनने को मिलती थी, लेकिन **समुझि नहीं तसि बालपन तब अति रहेउ अचेत** की स्थिति। इस संदर्भ में मुझे निरंतर यह भी स्मरण है कि ग्रीष्मकाल में जब स्कूल में गर्मी की छुट्टियाँ हो जाती थी तब घर में उपद्रव और धमाचौकड़ी के अतिरिक्त मेरे लिए और कोई काम शेष नहीं रह जाता। हमारी शरारत और उपद्रव दोपहर बाबूजी को असह्य हो जाता था क्योंकि इस समय वे थोड़ा आराम करते थे। बाबूजी के कोप से बचने के लिए पूज्य दादी जी मेरी बाँह पकड़ कर शयन कक्ष में ले जाती और मुझे सुलाने का प्रयास करती तो मैं भी राहुल की तरह दादी माँ से विनय करता "माँ कह एक कहानी" और मुझे अनवरत दादी माँ से भगवान बुद्ध की कथा और उनके जीवन के कुछ प्रेरक प्रसंग सुनने को मिलते, जो मुझे अत्यन्त रोचक लगता था।

स्पष्ट है कि इस प्रसंग को उद्धृत करने का मेरा मूल उद्देश्य यह है कि पिताश्री को रवीन्द्रनाथ टैगोर के काव्य के प्रति जो आकर्षण था, उसने मुझे छायावाद और रहस्यवाद में आसक्ति उत्पन्न की तो दूसरी ओर दादी माँ के द्वारा बहुश्रुत बुद्ध–कथा ने भगवान तथागत के प्रति मेरे मन में बाल्यकाल से अद्भुत अनुराग और आकर्षण भर दिया। विद्यार्थी जीवन में भी मैंने छायावाद और रहस्यवाद की बारीकियों को समझने के लिए बौद्ध, पालि साहित्य, संस्कृत साहित्य एवं हिन्दी साहित्य का चयन किया जो कि स्नात्कोत्तर तक मैंने बौद्ध–दर्शन, बौद्ध–अध्ययन, संस्कृत एवं हिन्दी साहित्य की सम्पूर्ण छायावादी रचनाओं को गंभीरता से अध्ययन किया। साथ ही बौद्ध–साहित्य का भी अध्ययन करता रहा। महाविद्यालय से लेकर अद्यतन विश्वविद्यालय में सेवा देते हुए भी मैं *"स्वाध्याय मा प्रमदः"* के सूत्र से अनवरत छायावाद एवं बुद्ध–दर्शन के प्रति जो जिज्ञासाएँ थी, उनके उन्मूलन हेतु स्वाध्याय करता रहा और एक दिन स्वतः मेरे मन में छायावादी रचनाओं में बौद्ध–दर्शन नामक ग्रंथ–संम्पादन करने की जिज्ञासा उत्पन्न हो गयी। इस संदर्भ में श्रीमद्भागवत कृपा से 9 अगस्त 1985 को अचानक भगवान तथागत की पवित्र ज्ञान भूमि पर स्थापित संस्कृत महाविद्यालय के प्राचार्य स्वर्गीय श्री कृष्णनंदन मिश्र जी के आवास पर माँ भगवती पीताम्बराजी के वरदपुत्र आचार्य डॉ. वैद्यनाथ मिश्र उर्फ चाचाजी की अहैतुकी कृपा प्राप्त करने का अवसर मिला और तबसे उनके सानिंध्य में कई ऐसे देवमानव के दर्शन एवं

सत्संग प्राप्त हुए जो निरंतर होते आ रहे है। जिसका वर्णन आगे मैं करूँगा।

विषय का स्वरूप एवं महत्व

हिन्दी की छायावादी रचनाओं में बौद्ध–दर्शन एक विराट मानव मूल्यों पर आधारित दर्शन है, जो त्रिकालजयी, सर्वव्यापक एवं सदैव प्रासंगिक है। भगवान बुद्ध की दिव्य करूणा का मूल स्रोत विश्व के सभी धर्मों का मेरूदंड है। संसार के सभी धर्मों एवं सम्प्रदायों में अन्तःस्रोत सभी जीवो पर दया और करुणा ही है। किसी प्राणी को मन वचन, और कर्म से किंचित पीड़ा पहुँचाना हिंसा और पाप है। हिन्दी छायावाद के महाकवि सर्वश्री जयशंकर प्रसाद, सुमित्रानन्दन पंत, सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला', महादेवी वर्मा एवं अन्य कवियों में डॉ. राम कुमार वर्मा, हरिकृष्ण प्रेमी एवं जानकी वल्लभशास्त्री, भवतीचरण वर्मा आदि कवि का काल–निर्धारण एवं काव्य में वर्णित समाज एवं अर्थ व्यवस्था आदि को ध्यान में रखकर अपना अध्ययन पूरा किया, किन्तु इसके साहित्यिक पक्ष पर कोई सुनियोजित कार्य नहीं हुआ है। इसे ध्यान में रख कर मैंने हिन्दी छायावादी रचनाओं में बौद्ध–दर्शन पर सीधा ग्रंथ का निरंतर अभाव की अनुभूति हुई हैं। वर्तमान समय में विश्वस्तरीय बौद्धधर्म से संबंधित अनेक साहित्यिक दार्शनिक शोध किये गये है जो समय–समय पर मुद्रित एवं प्रकाशित हुए है जिसका लाभ मैं अपनी रचना में स्रोत के तौर पर करने का साहस किया हूँ। जहाँ तक प्रश्न है कि हिन्दी छायावादी रचनाओं में बौद्ध धर्म–दर्शन जो हमारे ग्रंथ की महत्वपूर्ण कड़ी है और जिसका विश्व बौद्ध–धर्म दर्शन पर वर्तमान समय में बहुत गहरा प्रभाव पड़ा है परन्तु हमारी जानकारी में इस विषय पर बहुत ही स्पष्ट कार्य नहीं किये गये है। बौद्धधर्म की महाभाष्य शाखा जिसके अन्तर्गत मूल संस्कृत ग्रंथों के उपयोग बौद्ध–दर्शन के निर्माण में किये गये थे। परन्तु इनका साहित्यिक भूपटल पर सजाया और सँवारा नहीं गया इसलिए बौद्ध–दर्शन एक साहित्यिक दर्शन को अपना आधार बनाने का प्रयास किया है क्योंकि इसका मुद्रण एवं प्रकाशन वर्तमान काल तक नहीं हो सका है। किसी भी कृति का संरचनात्मक स्वरूप मुख्यरूप से दार्शिनिक और साहित्यिक तत्वों से संरचित होता है। साथ–साथ परिदृश्य के फलस्वरूप अभिव्यंजना के ढंग और प्रकृति के स्वरूप का निरीक्षण आदि प्रवृतियाँ छायावाद में प्रकट हुई तथा स्वानुभूति की प्रत्यक्षविवृति, जो व्यक्तिगत प्रणय से लेकर करूणा और आनन्द तक फैली हुई है। जहाँ दार्शनिक सिद्धान्तों का संबंध हैं वहीं छायावाद काव्य में

सर्ववाद, कर्मवाद, वेदान्त, शौमवादर्शन, अद्वैतवाद आदि पुराने सिद्धान्तों की अभिव्यक्ति मिलती है। जहाँ तक भाषा–शैली का सवाल है, छायावाद की अभिव्यंजना पद्धति नवीन और ताजा है। अतः साहित्यिक अध्ययन का वैशिष्ट्य स्वयं ही स्पष्ट है। साहित्यिक अध्ययन की विद्याओं में समस्त साहित्यिक तत्वों का सम्यक् स्वरूप प्रस्तुत करना आवश्यक है। संस्कृत साहित्य में ही नहीं अपितु बौद्ध साहित्य में भी लब्ध प्रतिष्ठ आचार्य विद्मान हैं उनकी कृति का अध्ययन अनेक दृष्टि में प्रस्तुत किया गया है। किन्तु दुर्भाग्यवश साहित्यिक दृष्टि को ध्यान में रखकर आज तक कोई भी शोध प्रंबंध देखने को नहीं मिला। अतः मैंने उचित समझा कि इस अपेक्षित विषय को अपने अध्ययन का विषय बनाऊं। अपने अध्ययन के क्रम में मैंने हिन्दी छायावादी कवियों द्वारा रचित रचनाओं में बौद्ध–दर्शन पर साहित्यिक महत्व पर प्रकाश डालते हुए समस्त तत्वों के समुचित विस्तार पूर्वक आलोचनात्मक चर्चा करने की प्रयास की एवं साथ ही अपनी इस ग्रंथ में मैंने भरपूर प्रयास किया है कि कहीं भी व्यर्थ एवं निरर्थक विस्तार न हो पाये। अतः शोध पद्धति के अनुसार मैंने ऐतिहासिक एवं पारंपरिक स्वरूप की चर्चा नहीं की है। अपने इस पुस्तक को प्रभावपूर्ण एवं सर्वजन संवेद्य बनाने के लिए आवश्यकतानुसार मैंने अपने पुस्तक को सप्तपुष्प में विभक्त किया है। प्रत्येक पुष्प में आवश्यकता एवं उद्देश्य को ध्यान में रख कर मैंने अपना विचार प्रस्तुत किया है। जो आप के समक्ष है।

महर्षि वेदव्यास के अनुसार :–

अष्टादश पुराणेषु व्यासस्य वचनं द्वयं।
परोपकाराय पुण्याय पापाय परपीडनम्।।

पवित्र बाइबिल के अनुसार

"Mercy is hevenly thing"

बर्डसवर्थ के अनुसार

"Who prayth well, who loveth well"

पवित्र कुरान शरीफ के 'अल बकर' के आयत के अनुसार –

"बंदों पर रहम कर।
खुदा की दी हुई नेमतो पर मत फूलो

नेक इंसान बन।"

इस प्रकार, भगवान तथागत के धर्म का मूल स्वर–सत्य और अहिंसा सर्वथा समीचीन है।

पुस्तक का स्वरूप

प्रस्तुत शोध–प्रबंध सात पुष्पों (खण्ड) में विभक्त है –

प्रथम पुष्प – **छायावादी रचनाओं में बौद्ध धर्म के स्वरूप एवं विषय परिचय** : इस अध्याय में बौद्ध धर्म में विभिन्न स्वरूपों का विस्तार से वर्णन करते हुए छायावादी रचनाओं पर इसके प्रभाव की खोज की गई है। अध्याय रोचक एवं बौद्ध धर्म से पूर्ण परिचय कराने में सहयोगी है, जिससे आगे के अध्यायों को पूर्ण करने में मुझे काफी सुविधा मिली है।

द्वितीय पुष्प – **छायावादी रचनायें एवं परिचय** : इस अध्याय में मैंने हिन्दी साहित्य के छायावादी काल में रचित सम्पूर्ण साहित्य पर एक विहंगम दृष्टि डालने का प्रयास किया है। साथ ही, छायावाद के उद्‌गम श्रोत एवं छायावाद के प्रमुख चार स्तम्भ माने जाने वाले – (1) प्रसाद, (2) निराला, (3) महादेवी, (4) पंत पर भी संक्षिप्त प्रकाश डालने का प्रयास किया है।

तृतीय पुष्प – **छायावादी रचनाकारों की दृष्टि में बौद्ध धर्म एवं जयशंकर प्रसाद** : इस अध्याय में मैंने बौद्ध–दर्शन को छायावादी रचनाकारों की दृष्टि से देखने और परखने का प्रयास किया है। भगवान तथागत के बोधिसत्त्व और सिद्धान्तों को अपने साहित्य में छायावाद–युगीन रचनाकारों ने किस प्रकार समायोजित किया है, इस पर प्रकाश डालने का प्रयास किया है।

चतुर्थ पुष्प – **छायावादी रचनाओं की दृष्टि में बौद्ध दर्शन के संदर्भ एवं चिंतन** : इस अध्याय में भी छायावादी रचनाकारों की दृष्टि में बौद्ध–धर्म दर्शन विषयक चिंतन जो उनकी रचनाओं में प्रतिबिम्बित हुए है, इस पर विस्तार से चिन्तन किया जायेगा।

नहीं • SAMPLE

पंचम पुष्प – **छायावादी रचनाओं में बौद्ध दर्शन का स्वरूप** : इस अध्याय में छायावादी रचनाकारों एवं रचनाओं में अभिव्यक्त बौद्ध दर्शन के अनावरण का एक छोटा सा प्रयास किया गया है। श्री जयशंकर प्रसाद, महादेवी वर्मा, सुमित्रानन्द पंत एवं 'निराला' के अतिरिक्त इस युग की रचनाओं में अभिव्यक्त बौद्ध–दर्शन को प्रस्तुत प्रसंग के साथ उद्धृत किया गया है।

षष्ठम् पुष्प – **नागार्जुन एवं अश्वघोष की रचनाओं में बौद्ध–धर्म के स्वरूप एवं दिशा** : बौद्ध–दर्शन के मर्मज्ञ नागार्जुन एवं अश्वघोष की रचनाओं में बौद्ध दर्शन का जो स्वरूप प्राप्त हुआ है, इस अध्याय में उस पर विस्तृत चर्चा की गयी है, जो बौद्ध–दर्शन की अवधारणाओं को पुष्ट एवं परिपक्व करता है।

सप्तम् पुष्प – **उपसंहार** : अन्त के अध्याय में मैंने अपने सम्पूर्ण प्रबंध के सार तत्त्व को अंकित करते हुए अपनी धारणा को स्पष्ट करने का प्रयास किया है।

यद्यपि वर्तमान में आभार प्रस्तुतीकरण की एक औपचारिक परिपाटी सी चल पड़ी है, यद्पि गुरूजनों के प्रति कृतज्ञता ज्ञापन करना शिष्य का परम कर्तव्य है। इस श्रृखला में मैं सर्वप्रथम अपने परम पूज्य स्वर्गीय पितामह पं0 रामकेश्वर त्रिपाठी एवं पितामही स्व0. त्रिपाठी चंद्रावती देवी के प्रति कृतज्ञ हूँ, जिन्होंने मुझे मूढ़मति को श्री सरस्वती साधना हेतु न केवल अभिप्रेरित किया अपितु मौलिक रूप से जननी के देहावसानोपरान्त हमे मातृ–प्रेम से भिगोया और अपने कथन (मूल से अधिक सूद की आशा सदैव होती है) द्वारा मुझमें स्फूर्ति व नवजीवन का संचार किया। मैं उनके प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करना अपना पुनीत कर्तव्य मानता हूँ। तदुपरान्त अपने जनक पं0 स्वर्गीय वासुदेव त्रिपाठी एवं जननी स्वर्गीया श्रीमति सुमित्रा त्रिपाठी के प्रति हार्दिक कृतज्ञ हूँ क्योंकि उन्होंने मुझे इस विशाल विलक्षण जगत में जन्म ही नहीं दिया अपितु स्वयं अनेकानेक विघ्नबाधाओं (सामाजिक, प्राकृतिक एवं आर्थिक) के झंझावात को झेलते हुए मेरे उद्भव, पल्लवन, संवर्धन एवं पुष्पण हेतु सदैव जाग्रत रहे और वंश परम्परागत विद्या को मेरे संस्कार में समाविष्ट किया।

परमपूज्या जननी स्वर्गीया सुमित्रा त्रिपाठी के द्वारा अक्षर ज्ञान बोध कराने की अवसर तो भगवतीपराम्बा ने नहीं दी किन्तु अप्रत्यक्ष रुप से केवल अक्षर बोध ज्ञान ही नहीं बल्कि अध्यात्म, व्यवहार, समाज एवं परिवार के प्रति आशीर्वाद प्रदान करती रहती है। परमपूज्य जनक स्वर्गीय पं0 श्री वासुदेव त्रिपाठी समाज–सेवा के प्रति ईमानदारी एवं कर्तव्यपारायणता के कारण बिहार ही नहीं अपितु उत्तरप्रदेश में भी व्यावहारिक विषयों का सूक्ष्मदर्शी से सूक्ष्माति सूक्ष्मज्ञान उनकी प्रतिभा एवं अन्वेषणात्मक शैली में इस पुस्तक की पूर्णता में उनका आर्शीवाद रहा है। स्वर्गीय पिताश्री की व्यंग्यात्मक वाणी ही हमें इस पुस्तक के प्रति आध्यात्मिक, ऐतिहासिक प्रवृति वाला बनाने में प्रेरक का कार्य किया है। वे कोई व्यंग्य का प्रयोग तब करते थे जब मैं उनके कथन को टाल देता था ***"चार कोर भीतर तब देवता और पीतर, चार कोर नाही तब प्राण गेलऽव ऑहीं"*** और जब मैं एक साथ अनेक कार्य आरंभ करता फिर भी व्यग्यात्मक शब्दों से प्रहार करना चूकते नहीं थे ***"एक तो करैला तीत दूजे चढ़ल नीम"*** उनके द्वारा प्रहार की गई इन बातों ने मुझे कर्तव्य मार्ग पर अग्रसर होने और समाज के अनेक चुनौतियों का सामना करने का अद्‌भूत साहस भरा है। अतः मैं अपने पिताश्री एवं माताश्री के प्रति रोम–रोम से ऋणी हूँ, तथा जिनके स्नेह एवं व्यंग्यात्मक मानसिकता ने मुझे विद्यार्जन के लिए अभिप्रेरित किया ही नहीं बल्कि वर्तमान में भी करता रहता है। इस पवित्र विद्यायज्ञ एवं ज्ञानयज्ञ में जनकतुल्य ताउ श्री केशरीनाथ त्रिपाठी, राज्यपाल बिहार एवं पश्चिम बंगाल, श्री नरसिंह नारायण पाण्डेय गृह सचिव झारखण्ड, श्री सुरेश कुमार भारद्वाज पुलिस महानिदेशक बिहार, एवं ज्येष्ठतम भ्राता श्री सच्चिदानंद त्रिपाठी, रवीन्द्रनाथ त्रिपाठी, नगेन्द्रनाथ त्रिपाठी वरीय पुलिस अधीक्षक कोलकाता एवं विजय त्रिपाठी, मातृसम भातृभार्याओं स्वर्गीया लालपड़ी त्रिपाठी, श्रीमती संयुक्ति एवं निर्मला त्रिपाठी के प्रति शीश झुकाना अपना परम कर्तव्य मानता हूँ, जिनके आशीर्वाद एवं सत् प्रेरणा के फलस्वरूप ही इस भौतिक एवं यांत्रिक युग में भी साहित्य, कला एवं अध्यात्म के प्रति मेरी अभिरूचि एवं जिज्ञासा शैशवावस्था से ही बनी रही। जिज्ञासा और स्वाध्याय के व्यसन ने हिन्दी के छायावादी कवियों के बारे में प्रचलित जनश्रुतियों से बाल्यावस्था में हीं परिचित कराया जिसके परिणामस्वरूप अपने जीवन के उन मौज–मस्ती के क्षण में ही अपने मस्तिष्क को आध्यात्म एवं साहित्यमय बनाया आज उसी का प्रति फल है कि मैंने इस साहित्यिक

एवं शोधात्मक पुस्तक का लेखन पूरा करने का साहस कर रहा हूँ।

आसित परहंसानां अवधबिहारीमिश्रणः।
तस्यपुत्रानामअभवत श्रीबैद्यनाथमिश्रगुरुः।।

किसी भी कार्य का समापन या सम्पादन के लिए गुरु की आवश्यकता होती है, जिनके निर्देशन में ज्ञान यज्ञ की सफलता प्राप्त होती है। उनमें आचार्य डॉ. वैद्यनाथ मिश्र हिन्दी साहित्य, दर्शन, औपनिषदिक दर्शन के साथ ही साथ बौद्ध–धर्मदर्शन के अद्वितीय निष्णात संस्कृत एवं हिन्दी के पं0 आचार्य मान्य मनीषी पितृवत गुरुवर आचार्य मिश्रजी का ध्यान आते ही मन वचन काय एवं सर्वेन्द्रिया अपने बाह्य व्यापार बोध को त्यागकर उन्हीं के चरणयुगल में लोटना चाहता हूँ। वास्तव में माँ भगवती पीताम्बरा ऐसे ही सद्पुत्रों के कारण आज के इस घोर पाखण्ड वैमनस्य एवं भ्रष्ट कलिकाल में भी स्थिर है। गुरु पिता–माता भ्राता बंधु एवं सखादि पंचरूप इस गुरुदेव में मैंने पाया है। जिनके सद परामर्श एवं उत्प्रेरक दृष्टि ने मुझे इस पुस्तक को पूरा करने में सामर्थ बनाया। ऐसे ही पंचरूपों का समन्वित रूप प्राचार्य स्वर्गीय श्री कृष्णनन्दन मिश्र जी है जिनसे शोध तकनीक का प्रत्यक्षतः ज्ञान प्राप्त कर मैंने इस पुस्तक को नूतन पद्धति में पिरोने का कार्य किया है। अतः उक्त गुरुजनों के प्रति मैं हार्दिक कृतज्ञ हूँ। गुरुगृह शिष्य का अपना गृह होता है ऐसा किसी ने श्रवण किया होगा किन्तु मुझे प्रत्यक्ष दर्शन ही नहीं बल्कि अद्यतन ज्ञान अर्जन कर भी रहा हूँ। गुरु माँ श्रीमति मंजु मिश्रा के द्वारा वर्तमान माँ की ममता एवं वात्सल्यपूर्ण स्नेह से मुझे ऐसा महसूस होता है कि मैं उन्हीं के द्वारा प्रसूत हूँ। ऐसे लोग इस स्वार्थी संसार में विरले ही होते है क्योंकि एक अबोध सद्यः जन्मा नवजात की भाँति गुरुमाँ ने मुझे शीतल छाँव प्रदान किया ऐसी ममतामयी माँ के लिए ईश्वर से प्रार्थना करता हूँ कि यदि मैंने जो कुछ भी पुण्य कर्म किया है जो जन्म जन्मान्तर में भी मुझे इस माँ की शीतल छाया प्रदान करे। भाषा विज्ञान एवं छायावादी काव्यधारा के अप्रतिम हस्ताक्षर, कवि, समीक्षक एवं मगध विश्वविद्यालय, बोधगया के भूतपूर्व (हिन्दी) विभागाध्यक्ष, प्रो0 (डॉ) उमेशचन्द्र मिश्र शिव जी न हमारी प्रार्थना स्वीकार कर पुस्तक के समग्रतः सुक्षमावलोकन कर पुरोवाक् (गहरे पानी पैठ) लिखने की अहैतुकी कृपा की, एतदर्थ हम उनके अत्यन्त आभारी है।

SAMPLE

गुरुजनों के उपरान्त धर्मपिताश्री सत्यनारायण तिवारी, माता श्रीमति लक्ष्मी देवी, श्रीमति गीता देवी तथा धर्मपत्नी डॉ. संगीता प्रियदर्शनी, पुत्र कुमार अभिनव, कुमार पारितोष, कुमारी संचिता, अनुज–विमल, सुनील, जितेन्द्र एवं आनन्द तिवारी जी को प्रसन्नता के लिए माँ भगवती पीताम्बरा जी से कामना करता हूँ इन्हें हर मनोकामना एवं समस्त कार्यों में सफलता प्रदान करें। तथा इस कार्य में जिन वरिष्ठ व कनिष्ट मित्रों का सहयोग प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप में मुझे इस पुस्तक को पूरा करने में मिला उनकी सूची अत्यन्त दीर्घ है और मैं समझ नहीं पाता कि उन मित्रों का उनके सहयोग के लिये किन शब्दों में आभार करूँ। इस कार्य में मैं सर्वप्रथम डॉ. रामनरेश पाण्डेय, डॉ. उमेशानन्द मिश्रा जिला न्यायधीश, दीपक कुमार मिश्र, श्री गिरीश पटनायक, डॉ. विजय कुमार, प्राचार्य महेश सिंह यादव कालेज तथा श्री आलोक कुमार गुप्ता एवं श्रीमति अरूणा गुप्ता पारागाँन फाइनान्स राँची का आभारी हूँ, क्योंकि इनके आर्थिक सहयोग के बिना प्रकाशन संभव नहीं था। अन्यान्य अधिकारी समेत उन समस्त मित्रों का आभारी हूँ, जिन्होंने मुझे सतत् सहयोग देकर कृतज्ञ बनाया है।

डॉ. अनिल कुमार त्रिपाठी
श्रीनिकेतन, बोधगया

विषय–सूची

	समर्पण	*v*
	पुरोवाकः– गहरे पानी पैठ	*vii*
	अंतर्मन के उद्‌गार	*xv*
1.	विषय परिचय	1
2.	छायावादी रचनाएँ एक संक्षिप्त परिचय	49
3.	छायावादी रचनाओं के दृष्टि में बौद्ध–धर्म एवं जयशंकर प्रसाद	67
4.	छायावादी रचनाओं की दृष्टि में बौद्ध धर्म के संदर्भ एवं चिन्तन	106
5.	छायावादी रचनाओं में बौद्ध धर्म का स्वरूप	137
6.	नागार्जुन एवं अश्वघोष की रचनाओं में बौद्ध–धर्म का स्वरूप एवं दिशा	
	(क) नागार्जुन की रचनाओं में बौद्ध धर्म का स्वरूप एवं जीवन परिचय	158
	(ख) अश्वघोष की रचनाओं में बौद्ध धर्म का स्वरूप एवं दिशा	201
7.	उपसंहार	227
	सहायक–ग्रन्थ सूची	242

SAMPLE

SAMPLE

1

विषय परिचय

अनादि काल से ही मनुष्य उस परम सत्ता की ओर आकर्षित रहा है, जिसने सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड की रचना की। जड़–चेतन समस्त वस्तुओं के चुम्बकीय आकर्षण, विभिन्नता और सुन्दरता सदैव से मनुष्य को आकर्षित करके इन सभी वस्तुओं के निर्माता से परिचय स्थापित करने के लिए उत्साहित करता रहा है। मनुष्य एक जिज्ञासु प्राणी है। वह अपने आस–पास की समस्त वस्तुओं को अपनी बुद्धि और विवेक से जानना चाहता है।

"मनुष्य विवेकशील प्राणी है वह बुद्धि द्वारा ज्ञान प्राप्त करता है। तात्पर्य यह है कि युक्तिपूर्वक तत्त्व प्राप्त करने के लिए प्रयत्न को ही दर्शन कहते हैं।" पाश्चात्य विद्वानों ने तो दर्शन को कौतूहल की निवृति का प्रमुख स्रोत माना है। भारतीय दार्शनिकों ने संसार को क्षणभंगुर और दुःखों का स्रोत माना है। भारतीय मनीषियों के मतानुसार **"ब्रह्म सत्यम् जगत मिथ्या"** तथा **"संसरति इति संसारः"** इत्यादि।

शोध के प्रारम्भ में भारतीय दर्शन पर हम एक बार विहंगम दृष्टि डालते हैं। दर्शन शब्द की व्याख्या :– दर्शन शब्द की व्युत्पत्ति दृश्य धातु से हुई है, जिसका अर्थ देखना या अवलोकन करना होता है। **'दृश्द्ध प्रेरअणे'** अर्थात् दृश्य धातु में ल्यूट प्रत्यय के योग से दर्शन बनता है। जिसका अर्थ **दृश्यते अनेनः इति दर्शन्**। दर्शनशास्त्र के अनुसार दर्शन का अर्थ है – तत्त्व के प्रकृत स्वरूप का अवलोकन; तत्त्व का विशेषार्थ ब्रह्म से है।

SAMPLE

श्लोक : **तद् इति सर्वनामं सर्व च ब्रह्म तस्तनाम तत इति तद्भावः तत्त्वं ब्रह्मणो यथात्म्यम।**

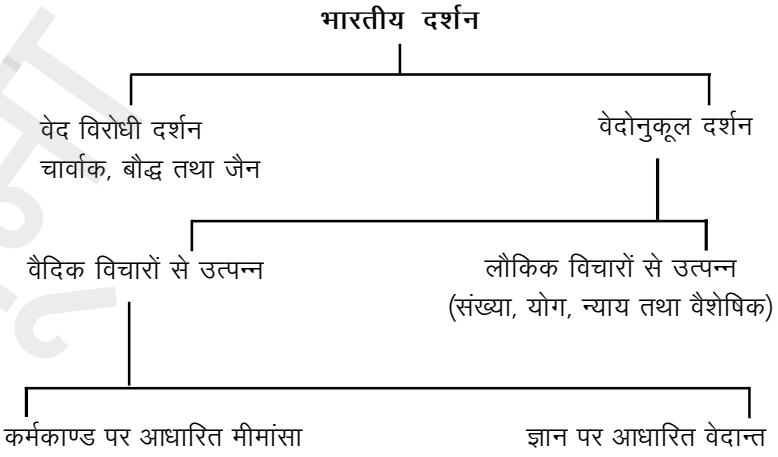
अर्थात् ब्रह्म के यथार्थ स्वरूप का सम्यक् ज्ञान ही दर्शन है।

भारतीय दर्शन में समन्वय की विराट चेष्टा दृष्टिगत होती है। यहाँ भारतीय दर्शन का अर्थ केवल हिन्दू दर्शन से नहीं है, अपितु इस दर्शन में आस्तिक, प्राचीन, अर्वाचीन, हिन्दू, अहिन्दू, आस्तिक, नास्तिक सभी मतों का स्थान है। इसकी दृष्टि उदार एवं व्यापक है। भारतीय दर्शन की प्रगाढ़ता का मूल कारण भी इसकी उदारवादी दृष्टि ही है। वेदान्त में चार वाक्य, बौद्ध, जैन, सांख्य मीमांसा न्याय, वैशेषिक आदि सभी मतों पर उदारता से विचार किया गया है।

भारतीय दर्शन का उद्देश्य

भारतीय दर्शन का मूल उद्देश्य पुरुषार्थ चतुष्टय की सिद्धि है। धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष इन चार महातत्त्वों में मोक्ष को ही आप्त तत्त्व या ब्रह्म–तत्त्व कहा गया है। इसकी प्राप्ति आध्यात्मिक ज्ञान से ही हो सकती है और भारतीय दर्शन आध्यात्मिक ज्ञान का आदि स्रोत है। यद्यपि मोक्ष को ही परम पुरुषार्थ माना गया है तथापि दार्शनिकों ने सांसारिक सुखों की भी महत्ता दी है। स्वार्थ और परमार्थ दोनों की सिद्धि भारतीय दर्शन का प्रमुख प्रयोजन है।

भारतीय दर्शन की शाखायें



भारतीय दर्शन का अध्ययनोपरान्त दो प्रमुख भागों में विभक्त किया जा सकता है –

(1) आस्तिक – जो वेदानुयायी है।

(2) नास्तिक – जो वेद विरोधी है।

भारतीय दर्शन में वेद का प्रमुख स्थान है, वेद केवल प्राचीन साहित्य ही नहीं भारतीय दर्शन का प्राण भी है। वेद को मानने वाले षड्–दर्शन (मीमांसा वेदान्त सांख्य योग, न्याय और वैशेषिक कर्म और ज्ञान दो प्रकार की विचारधारायें वेद में सम्मित है) मीमांसा में कर्मकाण्ड की प्रधानता है। ज्ञान का विषद विवेचन वेदान्त में हुआ है। उपयुक्त तथ्य को समझने के लिए निम्नलिखित तालिका द्रष्टव्य है।

भारतीय दर्शन

नास्तिक, आस्तिक (अपरलोकवादी चार्वाक)	(परलोकवादी बौद्ध, जैन तथा सभी वेदानुकूल दर्शन)

भारतीय दर्शन का मूल स्वरूप एवं विकास

भारतीय दर्शन का मूल आधार प्रत्यक्षानुभव है। पहले दार्शनिक किसी तथ्य की कल्पना करते है फिर प्रश्नों का समाधान आत्मानुभव तथा प्रत्यक्षानुभव के आधार पर सत्य की स्थापना करते है। जैसे ईश्वर है या नहीं? इस प्रश्न के प्रत्यक्षानुभव के आधार पर वे अपनी स्थापना संसार के सन्मुख रखते हैं, जिसे दर्शन कहते हैं। सत्यान्वेशन एवं प्रत्यक्षानुभव दर्शन के मेरूदण्ड की ईला और पिंगला नाड़ी के समान है।

पाश्चात्य दर्शन का जन्म आश्चर्य से हुआ है। दर्शन के सांस्कारिक कौतूहल की निवृति कहा गया है, जो शुद्ध बौद्धिक है। पाश्चात्य दर्शन की उत्पत्ति एक साथ नहीं अपितु एक–दूसरे के पश्चात् होती गयी है, जबकि भारतीय दर्शन की उत्पत्ति विभिन्न समयों में हुई है। पर इसका विकास सदियों तक साथ–साथ होता रहा है। चार्वाक के अतिरिक्त भारतीय दार्शनिक संसार को असार, सांस्कारिक सुखों को क्षणिक तथा अनित्य मानते है। सारा जीवन दुःखों से परिपूर्ण है। भारतीय दर्शन इसी दुख की औषधि की खोज करता है। भारतीय दार्शनिकों के द्वारा प्रत्यक्षानुभव एवं सत्य की कसौटी पर

नहीं SAMPLE

कस लेने के पश्चात् जो स्थापनायें रखी जाती थी उसके अनुकरण करने वाले लोगों का एक सम्प्रदाय बन जाता था, अस्तु भारतीय दर्शन के अनेक सम्प्रदाय बनते चले गये, लेकिन उनके दर्शन में एकरूपता एवं समन्वय का विराट प्रयास रहा। इस प्रकार वेद तथा उपनिषद के बाद सूत्र–साहित्य में दर्शन का प्रमुख स्थान हुआ। सूत्र शब्द का अर्थ सूत है, किन्तु भामति इस प्रसंग का अर्थ इस प्रकार किये हैं।

प्राचीन काल में दार्शनिक विवेचन मौखिक हुआ करता था। इसके स्मरण रखने में काफी कठिनाईयाँ होती थी और स्मृति लोप का भी भय था। अतः सूत्र ग्रंथ का निर्माण प्रारम्भ हुआ। वारदायन ने ब्रह्मसूत्र में वेदों और दार्शनिक सिद्धान्तों का संग्रह किया। वेदान्त का सर्वप्रथम क्रमबद्ध ब्रह्मसूत्र ही है। तत्पश्चात् जैनी में मीमांसा के लिए गौतम के न्याय के लिए, कनाद के वैशेषिक के लिए, पतंजलि ने योग के लिए क्रमशः मीमांसा सूत्र, न्यायसूत्र, वैशेषिक सूत्र और योग सूत्र की रचना की। सांख्य सूत्र की रचना भगवान कपिल ने किया।

भाष्य

भाष्य सूत्रों की टीकाएँ है। सूत्र साहित्य अत्यन्त संक्षिप्त, संश्लिष्ट और सारगर्भित होते थे। इसका अर्थ बोधगम्य नहीं होता था। अतः इसकी व्याख्या लिखी गई है। सूत्र ग्रंथ को टीका या भाष्य कहते हैं। भारतीय दर्शन एक विराट दर्शन है। इसका मूल भूतेतया महत्वपूर्ण साम्य उसका पुरुषार्थ साधन है। भारतीय दार्शनिक जीवन को अवसादमय और क्षणिक मानते है। इसलिए भारतीय दर्शन की उत्पत्ति का मूल कारण है – आध्यात्मिक असंतोष। दुःख एवं मानसिक अशांति के क्षण में अनेक विचार पानी के बुलबुले की तरह स्वतः उत्पन्न होते ही मिट जाते है। सभी दर्शन चाहे वो वेद मार्गी हो या वेद विरोधी दुःख निवारण के लिए सतत् प्रयत्नशील रहे है। दुःखों का कारण क्या है ? तथा इसका अन्त कैसे होगा इस विषय पर सतत् हमारे मनीषी, चिन्तक एवं दार्शनिक अनुसंधान कर रहे हैं। पाश्चात्य विद्वान भारतीय दर्शन के इसी दुःख निरोधक चिन्तन के कारण भारतीय दर्शन को निराशावादी दर्शन कहते है जो उचित नहीं है। भारतीय दार्शनिकों ने दुःखों से मुक्ति के उपाय भी बताये हैं। भगवान बुद्ध के चार आर्य सत्यों से यह सिद्ध हो जाता है कि दुःख का अन्त भी हो सकता है – (क) दुख है। (ख) दुःख का कारण है। (ग) दुःख का निरोध निर्वाण है। (घ) दुःख निरोध का मार्ग है।

स्पष्ट है कि भगवान् बुद्ध ने निर्वाण और मोक्ष को सर्वोपरि मानते हुए दुःख के निरोध का सर्वोत्तम मार्ग बतलाया है।[1]

सभी आस्तिक और नास्तिक दार्शनिक जगत की नैतिक व्यवस्था में विश्वास करते है। नैतिक व्यवस्था में विश्वास में सभी धर्मों का आधार है। दर्शन के अनुसार संसार में जो भी क्रियाकलाप है वह नियम जन्म है। व्यवस्था से उत्पन्न है। कोई भी कार्य अनियमित या अकस्मात् नहीं होता है। सब कुछ किसी दिव्य सत्ता द्वारा अहर्निश नियंत्रित होता है। यह नैतिक व्यवस्था सार्वभौम माँग है। यही विश्व की श्रृंखला और धर्म का मूल है।[2]

यही नैतिक व्यवस्था कर्मवाद कहलाता है। कर्मवाद के अनुसार मनुष्य इस संसार रूपी रंगमंच पर एक नट की तरह अपना कार्य करता है। हमारे जीवन की सभी उपलब्धियाँ कर्मजन्य है और कर्म की विभिन्नता ही संसार की विषमताओं का कारण है। संसार में कोई सुखी है तो कोई एक दुखी है। कोई एक उत्तम है तो कोई हीन एक अल्पायु है तो दुसरा दीर्घायु; एक रोगी है तो एक निरोगी; एक बुद्धिहीन है तो दूसरा बुद्धिमान; एक योगी है तो दूसरा भोगी। जैन दर्शन भी व्यावहारिक जीवन उपलब्धियों का कर्म द्वारा उत्पन्न मानता है। "शरीर का रंग, रूप, आकार, ज्ञानेन्द्रिय, प्रमेन्द्रीय आदि सभी कर्म के कारण ही प्राप्त होता है।[3]"

जैन और बौद्ध दर्शन जीवन के दुःख और सुख के कारण ईश्वर को नहीं वरण कर्म को मानते हैं। इस प्रकार कर्मवाद के अनुसार भारतीय दर्शन मनुष्य को अपने भाष्य का स्वतः नियामत मानता है। यह भारतीय दर्शन की प्रमुख विशेषता है।

"मनएव मनुष्यानां कारणं बंध मोक्षयो।"

भारतीय दर्शन के अनुसार मन को ही बंधन और मोक्ष का कारण माना गया है। उर्द्धवचिंतनगामी, मन का सतत् प्रयास निर्वाण के मार्ग को खोल देता है तथा हमारा अधोमुखी मन अनेक यातनाओं को झेलता हुआ दुःख सागर में डूब जाता है। इस मन का यदि सीधा संबंध ज्ञान से हो जाये तो मोक्ष का मार्ग और सरल हो जाता हैं। अज्ञानता के कारण ही हम विषयों के यथार्थ स्वरूप को नहीं जान पाते और सांसारिक विषयों से लिप्त हो जाते है, योग से आसक्ति की वृद्धि होती है। और हम विषयों के भीषण दलदल में डूबते चले जाते हैं। अज्ञानता के कारण अनित्य को नित्य, अपवित्र को

पवित्र, दुःख को सुख और अनात्म को आत्म मान लेते हैं।

अनित्यानि शरीराणि विभबो नैव शाश्वतः।
नित्य संनिहतो मृत्युः कर्तवयो धर्मसङ्ग्रहः।

मोक्ष के लिए आत्म तत्त्व का ज्ञान अपेक्षित है जो दो बातों पर निर्भर करती है –

1. निदिध्यासन : अर्थात् ऋषि मान्यताओं का अनवरत चिन्तन।
2. आत्म संयम : अज्ञान को दूर करने के लिए निदिध्यासन आवश्यक है।

अज्ञान का नाश केवल बुरे तत्त्व से नहीं होता, बल्कि तत्त्व ज्ञान का सतत् अनुशीलन आवश्यक है। "जिस प्रकार निरन्तर सांसारिक प्रपंचों में संलग्न रहने से मिथ्या ज्ञान या कुसंस्कार की पुष्टि होती है। उसी प्रकार विपरीत दिशा में दीर्घकालीन चिन्तन एवं अभ्यास के द्वारा ही उसका क्षय तथा नाश हो सकता है।" तात्पर्य है कि निरन्तर अभ्यास से ही मन को साधा जा सकता है। अतः मन के लिए श्रवण, मनन, निदिध्यासन, परम कर्तव्य बताया गया है।

"आत्मा वा अरे द्रष्टव्यः श्रोतव्यो मन्तव्यो निदिध्यासितव्यः।"

यहाँ आत्मा शब्द मन का ही पर्यायवाची है।

मन की एकाग्रता आवश्यक

मनोनिग्रह और आत्मसंयम से ही सांसारिक वासनाओं से मुक्ति संभव है। मोक्ष की प्राप्ति केवल तत्त्व ज्ञान से ही नहीं अपितु वासनाओं तथा नित्य प्रवृतियों का पूर्ण त्याग से ही संभव है। पंचदर्शी में कहा है –

"जानामि धर्मं न च मे प्रवृतिः।
जानाम्य धर्मं न च में निवृतिः।।"

हमारे अनन्तर मन के राग आदि का नाश तत्त्व ज्ञान से ही संभव है। तत्त्व ज्ञान की प्राप्ति के बाद इन्द्रियाँ पुराने अभ्यास का परित्याग कर ज्ञान मार्ग पर चलने लगती है। आत्मसंयम हेतु योग दर्शन में यम तथा नियम दोनों का महत्व दिया गया है। यम पाँच हैं – (1) हिंसा नहीं करना, (2) झूठ नहीं बोलना, (3) चोरी नहीं करना, (4) काम वासना में नहीं पड़ना, (5) लोभ नहीं करना।

नमूना SAMPLE

आत्मसंयम के महत्व को गीता में इस प्रकार बताया गया है –

"राग द्वेष विमुक्तैस्तु विषया निन्द्रियैश्चरन।
आत्म वश्यै विधियात्मा प्रसाद मधि गच्छति।।"

भारतीय दर्शन में मोक्ष जीवन का अन्तिम लक्ष्य

निर्वाण या मोक्ष की प्राप्ति से दुःखों का नाश तथा परमानंद की प्राप्ति होती है। जिस प्रकार से विभिन्न नदियों का अन्तिम लक्ष्य समुद्र है, वैसे ही भारतीय दर्शन के विभिन्न मार्गों का उद्देश्य केवल मोक्ष की प्राप्ति है।

भारतीय दर्शनों का संक्षिप्त परिचय

चार्वाक दर्शन–चार्वाक का संधि विच्छेद चारू + वाक्य जिसका अर्थ सुन्दर वचन। चारवाक्य दर्शन को वार्हशपत्य दर्शन भी कहते हैं। वेद और ईश्वर के प्रमाण को खण्डन करने के कारण इसे नास्तिक एवं जड़वाद दर्शन भी कहा जाता है। इस दर्शन में पृथ्वी, जल, तेज और वायु आदि जड़ तत्त्वों की महत्ता को स्वीकार की गयी है। चार्वाक के अनुसार प्रत्यक्ष ही एक मात्र प्रमाण है, जो वस्तु दृष्टि के सामने है वही सत्य है और उसी का अस्तित्व है। चार्वाक दर्शन अपरोक्ष एवं कल्पनाओं पर आधारित सत्य को सत्य नहीं मानता। चार्वाक दर्शन के अनुसार जब तक जीओ सुखपूर्वक जीओ, कर्ज लेकर भी घी पीयो, मरने के बाद शरीर भष्म हो जायेगा, फिर

'यावत जीवेत सुखं जीवेत।
ऋणं कृत्वा धृतम पीवेत।।
भस्मीभूतस्य देहस्य
पुरागमन कुतः।

चार्वाक दर्शन के अनुसार इनके सिद्धान्तों को तीन भागों में विभाजित किया गया है – (क) ज्ञान–मीमांसा, (ख) नीति मीमांसा, (ग) तत्त्व–मीमांसा।

ज्ञान–मीमांसा

चार्वाक दर्शन में ज्ञान–सिद्धान्त को सर्वोपरि माना गया है, इसका साक्ष्य है ज्ञान–विचार। भारतीय दर्शन में ज्ञान को दो भागों में बाँटा गया है – यथार्थ और अयथार्थ। यथार्थ ज्ञान को प्रमा कहते है और अयथार्थ ज्ञान को अप्रमा कहते हैं। प्रमा के उदाहरण के लिए – रज्जु का रज्जु रूप में, सर्प

का सर्प रूप में, ज्ञान यथार्थ या प्रमा का साधन ही प्रमाण है। जहाँ यथार्थ ज्ञान होता है वहाँ उसका साधन भी रहता है। चार्वाक दर्शन में यथार्थ ज्ञान और उसके साधन दोनों को आवश्यक माना गया है। भारतीय दर्शन में साधनों अर्थात् प्रमाण की संख्या छः मानी गयी है –

चार्वाक	:	प्रत्यक्ष।
बौद्ध	:	प्रत्यक्ष और अनुमान।
सांख्य	:	प्रत्यक्ष अनुमान और शब्द।
न्याय	:	प्रत्यक्ष अनुमान शब्द और उपमान।
मीमांसा	:	प्रत्यक्ष अनुमान शब्द उपमान और अर्थापात।

चार्वाक दर्शन के अनुसार यथार्थ ज्ञान का साधन मात्र प्रत्यक्ष है। आँखों से दिखने वाली वस्तु को ही सत्य माना है। प्रत्यक्ष ज्ञान इन्द्रियजन्य ज्ञान है। इन्द्रियों द्वारा हमें रूप, शब्द, गंध, स्वाद और स्पर्श का ज्ञान होता है। यह कि चार्वाक इन्द्रिय ज्ञान को ही प्रमाण मानते हैं।

अनुमान

अनुमान भारतीय दर्शन में दूसरा प्रमाण माना गया है। किन्तु चार्वाक सिर्फ प्रत्यक्ष को ही प्रमाण मानते हैं, जो इन्द्रिय ज्ञान का साधक है। अनुमान का खण्डन चार्वाक दर्शन में कई तर्कों द्वारा किया गया है –

1. **अनुमान निश्चयात्मक नहीं है** – अनुमान परोक्ष विषय का साधक है। अतः प्रमाण नहीं हो सकता। अनुमान में ज्ञात से अज्ञात का ज्ञान प्राप्त किया जाता है, तथा धूम्र को देखकर अग्नि का ज्ञान प्राप्त होता है।
2. **अनुमान का आधार व्याप्ति है** – अनुमान संदेहात्मक है। धूम और अग्नि में व्यापक संबंध है। अतः हम धूम्र को देखकर अग्नि का अनुमान करते हैं। पर्वत पर धूम्र को देखकर वहाँ अग्नि का अनुमान होना है। यहाँ दोनों में व्याप्ति संभव है।
3. **व्याप्ति संभव नहीं** – व्याप्ति या साहचर्य संबंध को नित्य तथा अनोपाधिक कहा गया है। जब दो वस्तुओं में व्यक्ति रेक न हो अर्थात् उनमें विपरीत रूप न दिखाई पड़े तभी यह नित्य संबंध हो सकता है। नित्य स्वरूप की जानकारी उपाधि ज्ञान के बिना संभव नहीं है। जैसे

SAMPLE